रोहिणीशकटभेदन तथा वैश्विक कोरोना महामारी
— एक विश्लेषण

— प्रो० बृजेश कुमार शुक्ल
(पद्मश्री सम्मानित)
अध्यक्ष संस्कृत विभाग
ललितकिशोर परिसर, ललितपुर

ज्योतिर्विज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो ग्रह-नक्षत्रों के विशेष चार के माध्यम से भावि घटनाओं का संकेत कर देता है। आज कोरोना वायरस का संक्रमण एक विशाल वैश्विक महामारी का रूप ग्रहण कर चुका है। ऐसे संकट-काल में एक ज्योतिर्विज्ञानी का कर्तव्य है कि वो अपनी दृष्टि से इस महामारी का विश्लेषण करे। अनेक ज्योतिषियों ने टी० वी० चैनल के माध्यम से इस महामारी के विषय में अनेक वक्तव्य प्रदान किये हैं, परन्तु कोई शोधात्मक और सूक्ष्म विचार प्रतिपादित नहीं हो सका है। आजकल ज्योतिषी केवल पञ्चाङ्ग में विहित ग्रहों के चार से समस्त गतिविधियों का विश्लेषण किया करते हैं। संहिता अथवा मौलिक ज्योतिष में प्रतिपादित अनेक सूक्ष्म तथ्यों और कारणों के प्रति प्रायः ध्यान नहीं जाता। संहिता ज्योतिष में पञ्चाङ्गीय ग्रहों के साथ आकाशीय गतिविधियों का अवलोकन अत्यन्त आवश्यक होता है। क्योंकि शास्त्र कहता है कि संहिता में पारङ्गत व्यक्ति ही दैविक गतिविधियों को जानता है—

संहितापारगश्चैव दैवचिन्तको भवति।[1]

नवम्बर 2019 में ग्रह शुक्र शनि तथा केतु की चक्र यात्रा में प्रति जनवरी 2020 की 15 तिथि तक चलती रही है। पुनश्च फरवरी 2020 में शनि का राशि परिवर्तन करके मकर में जाना, मार्च 2020 में शनि मङ्गल की युति तथा इसके पूर्व केतु एवं बृहस्पति की युति आदि कारणों को ज्योतिषियों ने इस कोरोना महामारी का कारण बतलाया है जो कदाचित् उचित नहीं है। ऐसे चार ग्रहों की युति अनेक वर्षों में आती रही है और उसके कुछ विशेष परिणाम नहीं देखे गये हैं। यद्यपि चार ग्रहों की युति का अच्छा लक्षण नहीं स्वीकार किया जाता है—

---

1. बृहत्संहिता - सांवत्सरसूताध्याय - 2०

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारो पञ्च वा ग्रहाः।
प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण वा जलेन वा॥[2]

अतः इस कोरोना जैसी वैश्विक महामारी इस प्रकार के योगों से प्रायः सम्भव नहीं है। सम्पूर्ण विश्व इससे प्रज्वलित हो रहा है, अतः इसका कोई सूक्ष्म ज्योतिषीय कारण हो सकता है। दिनाङ्क 14 नवम्बर 2019 को रात्रि में उत्तराकाश की ओर देखा तो चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र के पास दृष्टिगत हुआ यह चन्द्रमा प्रायः सत्ताईसवें दिन रोहिणी के पास आता ही है। परन्तु उक्त तिथि को मुझे चन्द्र, रोहिणी के अत्यधिक पास दिखायी दिया था। मैंने विचार किया कि क्या यह ग्रह रोहिणी शकट का भेदन तो नहीं कर रहा है? व्यस्तता के कारण इस पर मैंने ध्यान नहीं दिया। शनैः शनैः सी० ए० बिल के सन्दर्भ में आन्दोलन, मृत्यु तथा विवाद की स्थिति आती रही। जनवरी 2020 में चीन देश के अन्तर्गत कोरोना महामारी का उदय तथा धीरे-धीरे अन्य देशों में विस्तार और भारत में भी यह कोरोना वायरस रक्तबीज की भाँति वृद्धि को प्राप्त होने लगा। 25 मार्च 2020 से देश में पूर्णतया लाकडाउन का माहौल बना तब मुझे पूर्व आकाशीय घटना का स्मरण आया। अनेक ज्योतिषियों के विचार भी कोरोना महामारी के सन्दर्भ में आये, परन्तु मैं उनसे सन्तुष्ट न हो पाया और इस विभीषिका तथा विनाश के कारणभूत रोहिणी शकट भेदन पर विचार किया।

रोहिणी शकट भेदन का अर्थ और लक्षण

रोहिणी नक्षत्र वृषराशि के अन्तर्गत आता है। रोहिणी नक्षत्र का स्वरूप शकटाकार है अर्थात् बैलगाड़ी के आकार वाला है। रोहिणी नक्षत्र में पाँच तारे हैं। इसमें दो तारे मुख्य हैं जिनके नाम अल्देबरान तथा एप्साइलेन टारी हैं। क्रान्तिवृत्त से दक्षिण तथा उत्तर नक्षत्र या ग्रह की दूरी शर कहलाती है। रोहिणी मुख्य तारा क्रान्तिवृत्त से 5°/28′ दक्षिण में है अर्थात्

2 मयूर चित्रक-१६/३८

रोहिणी नक्षत्र का शर 5°/28' दक्षिण है। यह 45°/55' रेखांश पर स्थित है। एप्साइलन टारी उत्तरी तारा का शर 2°/34'/43" है। इस प्रकार यदि कोई ग्रह अपने शर (दक्षिण) के द्वारा 2°/34'/43" से 5°/28' के मध्य रोहिणी का स्पर्श करता है तो इसे रोहिणी शकट भेदन कहा जाता है। रोहिणी के अन्य तीन तारों के नाम है- बीटा टारी, डेल्टा, गामा तथा थीटा। चित्र से स्पष्ट है-

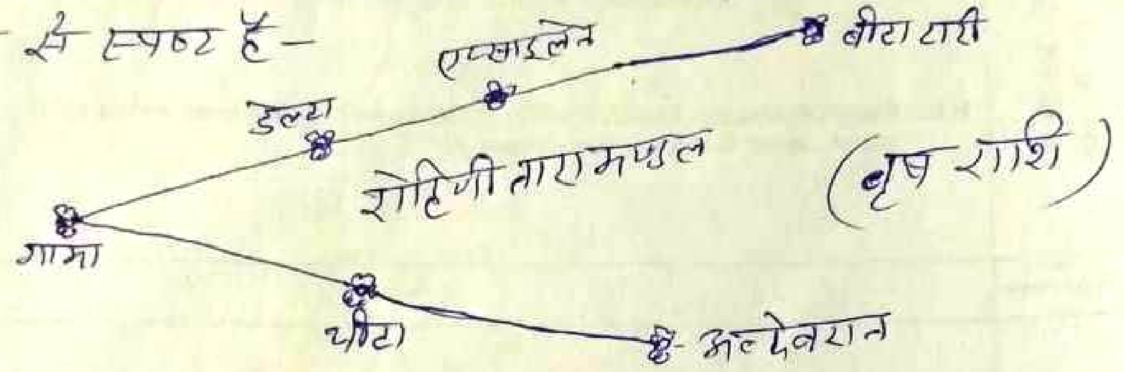

(रोहिणी शकट)

सूर्यसिद्धान्त के नक्षत्रग्रहयुत्याधिकार में लिखा है कि यदि किसी ग्रह का शर (दक्षिणी) 2° से अधिक हो और वह वृषराशि के 17° पर स्थित हो तो वह ग्रह रोहिणी शकट का भेदन करता है-

वृषे सप्तदशे भागे यस्य याम्योंऽशकद्वयात्।
विक्षेपोऽभ्यधिको भिन्द्याद् रोहिण्याः शकटं तु सः॥[3]

प्रकारान्तर से इसी तथ्य को ग्रहलाघवकार ने भी स्पष्ट करते हुए कहा है कि यदि कोई ग्रह वृषराशि के 17° पर स्थित हो और उसका दक्षिणी शर 50 अङ्गुल से अधिक होता है तो वह ग्रह रोहिणी शकट का भेदन करता है। यथा-

गवि नगाकुलवे खगोऽस्य चेद्यमदिगिषुः खशराङ्गुलाधिकः।
शकटमसौ भिनत्त्यसृक्शनिरुडुपो यदि चेज्जनक्षयः॥

इस प्रकार गणितीय रीति से रोहिणी शकट भेदन को स्पष्ट करना पड़ता है कि कौन सा ग्रह रोहिणी शकट का भेदन कर रहा है।

---

3. सूर्यसिद्धान्त नक्षत्रग्रहयुत्याधिकार-13

1°।55' के द्वारा रोहिणी शकट का भेदन नहीं कर पाता केवल नक्षत्र के दक्षिण की ओर से निकल जाता। इसके अनन्तर ग्रह के भार की गणना मैंने नहीं की है। जनवरी 2019 से मार्च 2020 तक स्पष्ट रूपेण चन्द्रमा ने रोहिणी शकट का भेदन किया है। आचार्य वराहमिहिर ने रोहिणी शकट को चन्द्र के द्वारा भेदित करने का फल इस प्रकार बतलाया है-

रोहिणीशकटमध्यसंस्थिते
चन्द्रमस्यशरणीकृता जनाः।
क्वापि यान्ति शिशुयाचिताशनाः
सूर्यतप्तपिठराम्बुपायिनः॥[12]

अर्थात् रोहिणीशकट के मध्य में स्थित चन्द्रमा यदि दृष्टिगोचर हों तो समस्त लोग शरण रहित हो जाते हैं। छोटे-छोटे बच्चों से माँग-माँग कर भोजन करते हैं और रोगाक्रान्त होने के कारण सूर्य किरणों से तपाये गये बर्तन में स्थित गर्म जल का सेवन करते हैं।

आज कोरोना महारोग के प्रसार से जन-जीवन उपर्युक्त दशा को सर्वथा प्राप्त हो रहा है। सम्पूर्ण संसार में हाहाकार विजृम्भित हो रहा है। लाखों की संख्या में लोग मृत्यु का ग्रास बन गये हैं। गणेश दैवज्ञ ने भी चन्द्र के द्वारा रोहिणी शकट के भेदन को जनता का महान् दोष बतलाया है-

कुभशकटमसौ भिनत्त्यसृक्कुशानिन्दुगो यदि
चेज्जनक्षयः।[13]

दिनाङ्क 26 अप्रैल 2020 को चन्द्रमा रोहिणी शकट का भेदन न करते हुए रोहिणी के दक्षिण से निकलेगा। यह भी संसार के लिए कष्टकारी है। जैसा कि वराहमिहिर का वचन है-

दुगो निकटगोऽथवा शशी दक्षिणे यदि भवेत्तदा स्थित
रोहिणीं यदि युनक्ति सर्वथा कष्टमेव जगतो विनिर्दिशे

12. बृहत्संहिता- रोहिणी योगाध्याय - 30
13. ग्रहलाघव- नक्षत्रछायाधिकार - 6
14. बृहत्संहिता- रोहिणी योगाध्याय- 28

आचार्य भट्टोत्पल ने इस पद्य की टीका करते हुए आचार्य गर्ग का मत उपस्थापित किया है जिसमें उपर्युक्त तथ्य का ही लेखन है—

~~रोहिणी शकट~~

रोहिणीशकटं भौमो भिनत्त्यर्कसुतोऽथवा।[6]
केतुर्वा जगतो ब्रूयात् प्रलयं समुपस्थितम्॥

यहाँ स्पष्ट करना है कि मङ्गल का शर अल्प है तथा शनि की शर सीमा भी 2°/29'/8" है। अतः इनके पात की स्थिति के अनुसार जब इनका शर 2°/35' के बराबर होगा, तभी ये ग्रह रोहिणी शकट का भेदन करेंगे। शिवनाथ झारखण्डी ने भारतीय ज्योतिष में लिखा है कि शकारम्भ के बाद शनि तथा मङ्गल के द्वारा रोहिणी शकट भेदन नहीं हुआ है। शक पूर्व 5294 के वर्ष में शनि का दक्षिणशर 2 अंश 34 कला आ रहा है उस समय शनि ने रोहिणी शकट का भेदन किया होगा।[7]

उपर्युक्त स्थिति 5294 + 1942 = 7236 वर्ष पूर्व आयी होगी। शनि के द्वारा किये गये रोहिणी शकट भेद का सङ्केत महाभारत में आया है—

प्राजापत्यं हि नक्षत्रं ग्रहस्तीक्ष्णो महाद्युतिः।
शनैश्चरः पीडयति पीडयन् प्राणिनोऽधिकम्॥[8]

अतः आज से 6-7 हजार वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ होगा। उस समय जन-धन की विशेष हानि हुई होगी। बृहत्संहिता तथा गर्गाचार्य ने केतु के द्वारा रोहिणी शकट का भेदन लिखा है जो कभी सम्भव ही नहीं है। इसका कारण केतु के शर का अभाव है। केतु, चन्द्र तथा क्रान्तिवृत्त के पात कटान बिन्दु का नाम है। ऐसा हो सकता है कि केतु जब वृष राशि के 17° अंश पर हो उसी समय चन्द्र भी केतु से

---

6. बृहत्संहिता - नक्षत्रकूर्माध्याय - 14 पर भट्टोत्पल वृत्ति
7. भारतीय ज्योतिष - पृ० 202
8. महाभारत - उद्योग पर्व 143/8

पूर्ति करता हुए रोहिणी शकट को भेदित करे तो उसे ही केतु द्वारा किया गया भेदन दैवज्ञों ने स्वीकार कर लिया हो। इसी लिए बृहत्संहिता के उपर्युक्त मयूर चित्रकाध्याय के पद्य में 'शिखी' शब्द के स्थान पर 'शशी' शब्द भी पाठान्तर के रूप में उपलब्ध होता है।[10] मङ्गल के द्वारा रोहिणी शकट भेदन महाभारत काल से भी अत्यधिक पूर्व हुआ होगा। अतः शनि मङ्गल द्वारा रोहिणी शकट भेद होने पर प्रलय जैसी स्थिति होती है।

इसके अतिरिक्त चन्द्रमा, बुध तथा शुक्र के परमशरों का मान अत्यधिक है। अतः ये ग्रह रोहिणी शकट का भेदन कर सकते हैं। बृहस्पति का परमशर 1°/18'/42" है। इस लिए यह भी शकट भेदन में समर्थ नहीं है।

चन्द्र, बुध तथा शुक्र के द्वारा यदि रोहिणी शकट भेदन होता है तो संसार में अथवा तत्केन्द्रित देशों में विवाद, रोग, रक्तपात, महामारी छत्रभङ्ग, अकाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि एवं आतङ्कवाद और युद्ध से प्रजा को कष्ट होता है। चन्द्रमा का पात 18 वर्षों में एक परिक्रमा पूर्ण करता है। अतः यह 5-6 वर्षों तक प्रत्येक परिक्रमा में रोहिणी शकट का भेदन करता रहता है। इसी प्रकार बुध तथा शुक्र भी वृष राशि के 17° पर होने से शर की स्थिति के अनुसार रोहिणी शकट का भेदन करते हैं।

आज सम्पूर्ण संसार में कोरोना वायरस की महामारी का उत्पात गणना करने से चन्द्र के द्वारा रोहिणी शकट के भेदन से ही उत्पन्न हुआ है। इसके पूर्व 1884 से 1888 ई० तक चन्द्र द्वारा रोहिणी शकट का भेदन हुआ था। इसी प्रकार 1992 ई० से 2001 ई० तक विभिन्न वर्षों में चन्द्र द्वारा रोहिणी शकट का भेदन किया गया था, जिसका परिणाम आप स्वयं समझ सकते हैं।

---

10. भारतीय ज्योतिष, पृ० 201

चन्द्रमा के हाए रोहिणी शकट का भेदन और कोरोना वायरस की महामारी

ग्रहलाघव कार ने लिखा है कि पुनर्वसु नक्षत्र से आठ नक्षत्रों में राहु के रहने पर चन्द्रमा रोहिणी शकट का भेदन करता है। राहु की गति सर्वदा वक्री होती है इसलिए पुनर्वसु से विपरीत क्रम से गिनने पर आँठवां नक्षत्र ऐसी आता है। इन नक्षत्रों में राहु सञ्चार होने पर चन्द्र के हाए रोहिणी शकट का भेदन किया जा सकता है—

स्वर्भानावदितिभतोऽष्टर्क्षसंस्थे
शीतांशुः कथ शकटं सदा किनाति॥[11]

राहु पुनर्वसु नक्षत्र में तो फरवरी मार्च 2019 में ही आ गया था। यह 14 नवम्बर 2019 को आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में था। रोहिणी नक्षत्र में वृषराशि के लगभग 17° पर चन्द्र की स्थिति थी। इस तिथि पर चन्द्रमा का शर निकाला। प्रत: ज्ञापित करने के लिए ज्योतिर्विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक-वैशेषज्ञ श्री लक्ष्मीकान्त अग्निहोत्री से इस दिन के चन्द्रशर की गणना करवायी। केतकी ग्रहगणित से दिनाङ्क 14 नवम्बर 2019 को चन्द्रमा का शर 2°/39' दक्षिणीय। अत: रोहिणी शकट का भेदन हो रहा था। इसी प्रकार 11 दिसम्बर 2019 को रोहिणी स्थित चन्द्रमा का दक्षिणशर 2°/54'/33" था। यहाँ भी रोहिणी शकट का भेदन हो रहा था। दिनाङ्क 08 जनवरी 2020 को चन्द्रमा का दक्षिण शर 2°/18' था। रोहिणीस्थ चन्द्रमा रोहिणी के दक्षिण से निकल गया शकट भेदन नहीं कर पाया। पुनश्च 04 फरवरी 2020 को रोहिणी तथा वृषराशि के 17° पर स्थित चन्द्र ने अपने 2°/40' के दक्षिणी शर से रोहिणी शकट का भेदन किया। 02 मार्च 2020 को वृषस्थ रोहिणीगत चन्द्रमा ने अपने 2°/49' के दक्षिण शर से पुन: रोहिणी शकट का भेदन किया। 26 अप्रैल 2020 को रोहिणी नक्षत्र तथा वृषराशि के 17° पर स्थित चन्द्रमा अपने दक्षिणी शर

---

11. ग्रहलाघव - नक्षत्रच्छायाधिकार- 2

ग्रहों के परमशर तथा ग्रहों द्वारा रोहिणी शकट भेदन की सम्भाव्य स्थिति तथा फल

सिद्धान्त ज्योतिष की वेधीय स्थिति के अनुसार परिगणित ग्रहों के परम शरों का मान अधोलिखित है-

सूर्य -	00°/00'/00"
चन्द्रमा -	05°/08'/43"
मङ्गल -	01°/51'/00"
बुध -	07'/02'/00"
गुरु -	01°/18'/42"
शुक्र -	03°/23'/41"
शनि -	02°/29'/08"

उपर्युक्त ग्रहों के परम शरों की स्थिति के अनुसार सूर्य का शर 00° अंश है, अतः वह कभी रोहिणी शकट का भेदन नहीं कर सकता है। चन्द्र का शर (परम) 5°/8'/43" है यह उक्त कार्य करने में सक्षम है। मङ्गल का परम शर भी कम है। अतः उसके द्वारा भी रोहिणी शकट भेदन नहीं हो सकता। बुध तथा शुक्र के परम शर अत्यधिक हैं। अतः ये रोहिणी शकट को भेद सकते हैं। शनि का परम शर 2°/29'/8" है, अतः इसके द्वारा भी यह कार्य असम्भव है। मङ्गल तथा शनि के द्वारा रोहिणी शकट का भेदन प्रलयङ्कर होता है ऐसा युगान्तर में ही सम्भव हो सकता है-

भौमार्क्योः शकटभिदा युगान्तरे स्यात्।
सेदानीं न हि भवती दृशि स्वपाते॥[५]

वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में लिखा है कि रोहिणी शकट का भेदन यदि शनैश्चर, मङ्गल अथवा केतु करें तो सम्पूर्ण संसार अनिष्ट रूपी समुद्र में नाश को प्राप्त हो जाता है-

रोहिणीशकटमर्कनन्दनो यदि भिनत्ति रुधिरोऽथवा शिखी।
किं वदामि यदनिष्टसागरे जगदशेषमुपयाति सङ्क्षयम्॥[६]

---

५. ग्रहलाघव - नक्षत्रच्छायाधिकार - ८

६. बृहत्संहिता [illegible] ३४

इस प्रकार कोरोना जैसी महामारी की विभीषिका चन्द्रमा के द्वारा रोहिणी शकट भेदन से उत्पन्न हुई है। खगोलीय स्थिति से इस समय विश्व की स्थिति उत्तम नहीं है। दिनांक 14 अप्रैल 2020 के बाद भी देश-विदेश में लाकडाउन रहेगा क्यों कि अप्रैल का महीना ग्रहजन्य आकाशीय घटनाओं से ओत प्रोत है। 13 अप्रैल को बृहस्पति तथा शनि एक ही नक्षत्र और अंशों में स्थित होकर मङ्गल के साथ युति कर रहे हैं। इसमें शनि गुरु को पराजित करके अग्रगम्य होगा। अतः रोग की वृद्धि होगी तथा ~~[illegible]~~ अच्छे नियमों का उल्लङ्घन होगा। 20 अप्रैल से 26 अप्रैल तक उल्कापात का योग है। उल्कापात का फल अनिष्ट होता है। यह जिस देश नगर तथा स्थान पर गिरती है, वहाँ के प्राणियों को पीड़ा होती है। इस प्रकार युति आदि ग्रहों के योग कृषि, धन, तथा राजाओं के तेज का नाश करते हैं। ऐसे समय में प्राकृतिक आपदाएं यथा अग्निकाण्ड, भूकम्प, ओला वृष्टि, विद्युत्पात तथा युद्ध का वातावरण रहता है।

रोहिणी शकट भेदन का प्रभाव षट्मास तक

रोहिणी शकट भेदन का प्रभाव छह मास तक ~~[illegible]~~ स्थूलतया देखा जाता है। अन्तिम शकट भेदन मार्च 2020 में पाया गया। अतः यह 04 अगस्त 2020 तक परिणाम देता रहेगा। इसके अतिरिक्त सूक्ष्मतया विचार करने पर राहु जिस नक्षत्र में रहकर चन्द्र के द्वारा रोहिणी शकट का भेदन करता है उक्त फल अपने नक्षत्र भोग पर्यन्त प्रदान करवाता रहता है। राहु के आर्द्रा नक्षत्र में रहने पर ही चन्द्रमा ने रोहिणी शकट का भेदन किया था। अतः यह प्रभाव दिनाङ्क 18 मई 2020 तक बना रहेगा, क्यों कि 18-19 मई 2020 को राहु, आर्द्रा से वक्रगति के कारण मृगशिरा में जा रहा है। 19 मई 2020 तक यदि जन-सम्मर्द हुआ और लाकडाउन को खत्म किया गया तो अवश्य ही घातक

परिणाम होंगे।

कोरोना वायरस की उत्पत्ति जलचर-वनचर पक्षियों के द्वारा

चन्द्र के द्वारा रोहिणी शकटभेदन से इस कोरोना वायरस की उत्पत्ति ज्योतिषीय दृष्टि से प्रमाणित होती है। रोहिणी नक्षत्र के पीडन का परिणाम अग्र नक्षत्र मृगशिरा को भी सम्मिलित रूप से प्राप्त होता है। रोहिणी का सम्बन्ध जलचरों से तथा मृगशिरा का सम्बन्ध वनचर पक्षियों से है।[14] अतः कोरोना वायरस जलचर तथा वनचर पक्षियों में प्राप्त होगा। आर्द्रा नक्षत्र में राहु की स्थिति थी। आर्द्रा नक्षत्र कूर्मचक्र विभाग में पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।[15] आर्द्रा एक हिंस्र, क्रूर एवं अभिचार परक नक्षत्र है।[16] अतः यह प्रथमतया पूर्व में स्थित चीन देश से क्रूरता और अभिचार पूर्वक निःसृत हुआ। आर्द्रा के अक्षर 'कु' (को) से ही इसका नामकरण 'कोरोना' प्राप्त हुआ। केतु का नक्षत्र पूर्वाषाढ जलमार्गगामी है।[18] अतः यह रोग समुद्रतटीय स्थानों एवं जल मार्ग से आने जाने वालों के द्वारा अत्यधिक प्रसरित हुआ। उत्पत्ति के मूल कारण की जानकारी 20 सितम्बर 2020 के बाद सार्वजनिक होगी और तभी इसकी औषधि भी वैज्ञानिकों के द्वारा निकाली जा सकेगी। इस समय मूल नक्षत्र में केतु की स्थिति है। मूल नक्षत्र औषधि तथा वैद्य का प्रतिनिधित्व करता है।[19] 20 सितम्बर 2020 को राहु-केतु राशि का परिवर्तन करेंगे। केतु का नक्षत्र भी परिवर्तित होगा। अतः 20 सितम्बर 2020 के पश्चात् स्थितियों में व्यापक सुधार होगा। जनता की त्रासदी भी शिथिल हो सकेगी।

---

14. बृहत्संहिता- नक्षत्रव्यूहाध्याय - 2-3
15. बृहत्संहिता कूर्मविभागाध्याय - 5-6
16. रौद्रे वधबन्धानृतपरदारस्तेयशाठ्यभेदरताः।
    तुषधान्यतीक्ष्णमन्त्राभिचारवेतालकर्मज्ञाः॥
    (बृहत्संहिता- नक्षत्रव्यूहाध्याय-8)
18. बृहत्संहिता- नक्षत्रव्यूहाध्याय - 18
19. बृहत्संहिता- नक्षत्रव्यूहाध्याय - 16

महामारी में वृद्धि तथा युद्ध की सम्भावना

पश्चिम दिशा में उदित शुक्र रोहिणी मण्डल की ओर आ रहा है और यह सम्भवतः दिनाङ्क 20-21 अप्रैल 2020 को रोहिणी शकट का भेदन कर सकता है। यदि शुक्र ने रोहिणी शकट का भेदन किया तो अवश्य इस कोरोना महामारी में वृद्धि हो सकती है। शुक्रकृत रोहिणी शकट भेदन निश्चय ही रोगों की वृद्धि करेगा। इस के द्वारा नवमहीने के बाद पूर्वी तथा पश्चिमी देशों में युद्ध का वातावरण बन सकता है। बृहस्पति तथा शनि एक ही राशि में तथा एक ही नक्षत्र में अवस्थित हैं। अतः लोकविद्वेष तथा देशद्रोह होगा। गुरु तथा शनि श्रवण नक्षत्र में जनवरी 2021 में आयेंगे उक्त जनवरी 2021 से तीन मास के अन्तर्गत युद्ध का तनाव हो सकता है। यह युद्ध भारत के द्वारा नहीं होगा। अन्य देश युद्ध की विभीषिका उत्पन्न करेंगे।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि कोरोना महामारी का प्रसार चन्द्रकृत रोहिणी शकट भेदन से हुआ है। इस रोग की विभीषिका सम्पूर्ण संसार में दिनाङ्क 18 जुलाई 2020 तक न्यूनाधिक रूप में प्रचलित रहेगी। इस प्रकार ज्योतिषीय आधार पर इस कोरोना जैसी महामारी का विश्लेषण किया गया है। सम्पूर्ण तथ्य ज्योतिषीय सन्दर्भों तथा गणना पर आधारित हैं। यह कोई मेरा निजी कथन नहीं है, एक शोधपूर्ण विश्लेषण है जिसका सुधीजन प्रमाण हैं।